

# **INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**



**ISSN 2277 – 9809 (online)**

**ISSN 2348 - 9359 (Print)**

*An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal*

[www.IRJMSH.com](http://www.IRJMSH.com)  
[www.isarasolutions.com](http://www.isarasolutions.com)

Published by iSaRa Solutions

## एकल परिवारों का बढ़ता प्रचलन और भारतीय समाज पर उसका प्रभाव: सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

**Indrajeet**  
Research Scholar

### सारांश (Abstract)

परिवार मानव समाज की सबसे महत्वपूर्ण एवं आधारभूत सामाजिक संस्था है। यह व्यक्ति के जन्म, समाजीकरण, भावनात्मक विकास, आर्थिक सुरक्षा तथा सांस्कृतिक पहचान के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारतीय समाज में लंबे समय तक संयुक्त परिवार व्यवस्था सामाजिक संगठन का प्रमुख आधार रही है, जिसमें कई पीढ़ियां एक साथ रहकर पारस्परिक सहयोग, उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण करती थीं। परंतु आधुनिक सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं ने पारिवारिक संरचना के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। वर्तमान समय में एकल या न्यूक्लियर परिवारों का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है।

औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा का विस्तार, रोजगार के अवसरों की गतिशीलता, महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता, वैश्वीकरण और आधुनिक जीवन शैली ने भारतीय परिवार व्यवस्था को प्रभावित किया है। एकल परिवारों ने व्यक्तियों को स्वतंत्र निर्णय लेने, व्यक्तिगत विकास और आर्थिक नियोजन की सुविधा प्रदान की है, लेकिन इसके साथ ही सामाजिक अलगाव, वृद्धजनों की उपेक्षा, बच्चों के समाजीकरण में परिवर्तन और पारिवारिक संबंधों में कमी जैसी चुनौतियां भी सामने आई हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र में एकल परिवारों के बढ़ते प्रचलन के कारणों तथा भारतीय समाज पर इसके सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का समाजशास्त्रीय विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि आधुनिक परिस्थितियों में परिवार संस्था किस प्रकार परिवर्तित हो रही है और इन परिवर्तनों का व्यक्ति तथा समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है।

### प्रमुख शब्द (Keywords):

एकल परिवार, न्यूक्लियर परिवार, परिवार संस्था, सामाजिक परिवर्तन, आधुनिकीकरण, नगरीकरण, वैश्वीकरण, भारतीय समाज।

## 1. प्रस्तावना (Introduction)

परिवार मानव समाज की सबसे प्राचीन, सार्वभौमिक और आधारभूत सामाजिक संस्था है। यह वह प्राथमिक सामाजिक इकाई है जिसमें व्यक्ति का जन्म होता है और यहीं से उसका प्रारंभिक सामाजिककरण प्रारंभ होता है। प्रत्येक समाज में परिवार व्यक्ति और व्यापक समाज के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु (bridge) का कार्य करता है, जिसके माध्यम से व्यक्ति सामाजिक मूल्यों, परंपराओं, व्यवहारों और सांस्कृतिक मान्यताओं को सीखता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से परिवार केवल पति-पत्नी और बच्चों का जैविक या भावनात्मक समूह नहीं है, बल्कि यह एक जटिल सामाजिक व्यवस्था है जिसमें सामाजिक संबंधों का ताना-बाना, भावनात्मक जुड़ाव, आर्थिक सहयोग और सांस्कृतिक मूल्यों का सतत हस्तांतरण शामिल होता है।

परिवार समाजीकरण की प्रक्रिया का सबसे प्रभावशाली माध्यम है। व्यक्ति का व्यक्तित्व, उसकी सोच, व्यवहार और सामाजिक दृष्टिकोण काफी हद तक परिवार के वातावरण पर निर्भर करता है। परिवार के भीतर ही व्यक्ति पहली बार अनुशासन, जिम्मेदारी, प्रेम, सहयोग, त्याग और सामाजिक नियमों को समझता है। इस प्रकार परिवार समाज की स्थिरता और निरंतरता बनाए रखने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

भारतीय समाज में परिवार संस्था का स्थान विशेष रूप से महत्वपूर्ण रहा है। भारत में परिवार को केवल एक सामाजिक इकाई के रूप में नहीं बल्कि एक सांस्कृतिक और नैतिक संस्था के रूप में देखा जाता रहा है। पारंपरिक भारतीय संस्कृति में परिवार को व्यक्ति की सामाजिक पहचान, सुरक्षा और नैतिक विकास का प्रमुख आधार माना गया है। व्यक्ति की सामाजिक स्थिति और प्रतिष्ठा भी काफी हद तक उसके परिवार से जुड़ी होती थी।

भारतीय समाज की एक प्रमुख विशेषता संयुक्त परिवार व्यवस्था रही है, जिसने सदियों तक सामाजिक जीवन को प्रभावित किया है। संयुक्त परिवार प्रणाली में एक ही वंश या रक्त संबंध से जुड़े अनेक सदस्य एक साथ निवास करते हैं। इसमें माता-पिता, उनके विवाहित पुत्र, पुत्रवधू, पोते-पोतियां तथा अन्य निकट संबंधी एक ही छत के नीचे रहते हुए सामूहिक जीवन जीते हैं। इस व्यवस्था में संसाधनों का साझा उपयोग किया जाता है और परिवार के सभी सदस्य सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना के साथ जीवन व्यतीत करते हैं।

संयुक्त परिवार व्यवस्था में सामूहिकता और सहयोग को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती थी। परिवार का मुखिया सामान्यतः निर्णय लेने की प्रमुख भूमिका निभाता था, जबकि अन्य सदस्य उन निर्णयों का पालन करते थे। यह व्यवस्था केवल आर्थिक सहयोग तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें

भावनात्मक सुरक्षा और सामाजिक समर्थन भी निहित था। संयुक्त परिवार में वृद्धजनों को सम्मान और देखभाल प्राप्त होती थी, जबकि बच्चों को अनेक पीढ़ियों के अनुभव, मार्गदर्शन और पारिवारिक संस्कारों का लाभ मिलता था। इससे सामाजिक मूल्यों और सांस्कृतिक परंपराओं का हस्तांतरण प्रभावी ढंग से होता था।

संयुक्त परिवार व्यवस्था ग्रामीण और कृषि आधारित समाजों में विशेष रूप से उपयोगी रही है, जहां उत्पादन, श्रम और संसाधनों का सामूहिक उपयोग आवश्यक था। यह व्यवस्था सामाजिक सुरक्षा का एक मजबूत तंत्र भी प्रदान करती थी, क्योंकि किसी भी सदस्य के संकट की स्थिति में पूरा परिवार उसके साथ खड़ा होता था। इस प्रकार संयुक्त परिवार ने भारतीय समाज में स्थिरता, सुरक्षा और सांस्कृतिक निरंतरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

हालांकि आधुनिक समय में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं ने पारिवारिक संरचना को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा का विस्तार, रोजगार के बदलते स्वरूप, वैश्वीकरण और तकनीकी विकास ने भारतीय परिवार व्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। आधुनिक शिक्षा ने व्यक्तियों में स्वतंत्र विचार, आत्मनिर्भरता और व्यक्तिगत निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ावा दिया है। इसके साथ ही रोजगार के अवसरों का शहरों और औद्योगिक क्षेत्रों में केंद्रित होना ग्रामीण से शहरी प्रवासन को बढ़ावा देने लगा है, जिससे पारिवारिक संरचना प्रभावित हुई है।

नगरीकरण ने जीवन शैली को अत्यधिक बदल दिया है। शहरों में सीमित आवासीय स्थान, उच्च जीवन-यापन लागत और तीव्र जीवन गति के कारण संयुक्त परिवार की तुलना में छोटे परिवार अधिक व्यावहारिक और सुविधाजनक प्रतीत होने लगे हैं। इसके अतिरिक्त, आधुनिक समाज में व्यक्तिगत स्वतंत्रता, निजी जीवन और करियर विकास को अधिक महत्व दिया जाने लगा है, जिससे न्यूक्लियर परिवारों की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है।

वर्तमान समय में अधिकांश शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चों तक सीमित परिवार सामान्य रूप से देखने को मिलते हैं। ऐसे परिवारों में निर्णय लेने की प्रक्रिया अपेक्षाकृत सरल होती है और व्यक्ति अपने जीवन संबंधी निर्णय अधिक स्वतंत्र रूप से ले सकता है। हालांकि यह परिवर्तन केवल पारिवारिक आकार में कमी तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक मूल्यों, संबंधों और जीवन शैली में व्यापक परिवर्तन का संकेत भी देता है।

एकल (न्यूक्लियर) परिवार आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं के अनुरूप अधिक सुविधाजनक और अनुकूल माने जा रहे हैं, लेकिन इसके साथ ही सामाजिक सहयोग में कमी, वृद्धजनों की

देखभाल की समस्या, बच्चों के सामाजिक अनुभवों में कमी और पारिवारिक संबंधों में दूरी जैसी कई सामाजिक चुनौतियां भी उत्पन्न हुई हैं।

अतः यह स्पष्ट है कि भारतीय समाज में पारिवारिक संरचना में हो रहे परिवर्तन केवल एक सामाजिक बदलाव नहीं हैं, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया का हिस्सा हैं। इसलिए एकल परिवारों के बढ़ते प्रभाव और उनके सामाजिक परिणामों का समाजशास्त्रीय अध्ययन वर्तमान समय में अत्यंत आवश्यक और प्रासंगिक हो जाता है।

## 2. शोध समस्या (Research Problem)

भारतीय समाज में परिवार संस्था एक अत्यंत महत्वपूर्ण और निरंतर परिवर्तनशील सामाजिक संस्था रही है। यह संस्था न केवल व्यक्ति के सामाजिककरण का आधार है, बल्कि सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मूल्यों और आर्थिक संबंधों के संचालन में भी केंद्रीय भूमिका निभाती है। परंपरागत रूप से भारतीय समाज में संयुक्त परिवार व्यवस्था का व्यापक प्रचलन रहा है, जिसमें अनेक पीढ़ियां एक साथ रहते हुए सामूहिक जीवन व्यतीत करती थीं। यह व्यवस्था सामाजिक सुरक्षा, आर्थिक सहयोग और सांस्कृतिक निरंतरता का प्रमुख माध्यम रही है।

किन्तु आधुनिक समय में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की तीव्र प्रक्रिया ने पारिवारिक संरचना में महत्वपूर्ण बदलाव उत्पन्न किए हैं। औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा का विस्तार, वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और बदलती जीवन शैली के कारण संयुक्त परिवारों की जगह न्यूक्लियर या एकल परिवारों का विस्तार तेजी से देखा जा रहा है। यह परिवर्तन केवल परिवार के आकार में बदलाव नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संबंधों, पारिवारिक भूमिकाओं और मूल्यों में भी गहरे परिवर्तन को दर्शाता है।

इस संदर्भ में यह आवश्यक हो जाता है कि यह समझा जाए कि भारतीय समाज में परिवार संस्था किस प्रकार और किन कारणों से परिवर्तित हो रही है तथा इस परिवर्तन का विभिन्न सामाजिक वर्गों और परिवार के सदस्यों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। विशेष रूप से यह अध्ययन इस बात पर केंद्रित है कि आधुनिक सामाजिक संरचना में न्यूक्लियर परिवारों की बढ़ती प्रवृत्ति किन परिस्थितियों में विकसित हुई और इसके परिणामस्वरूप सामाजिक जीवन में कौन-कौन से परिवर्तन आए हैं।

इस शोध की प्रमुख समस्या निम्नलिखित प्रश्नों से संबंधित है:

1. भारत में एकल (न्यूक्लियर) परिवारों के बढ़ने के प्रमुख सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारण क्या हैं?

2. सामाजिक एवं आर्थिक परिवर्तन, जैसे औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा और वैश्वीकरण, परिवार संरचना को किस प्रकार प्रभावित कर रहे हैं?
3. एकल परिवारों का बच्चों के समाजीकरण, महिलाओं की भूमिका और वृद्धजनों की सामाजिक एवं भावनात्मक स्थिति पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?
4. क्या न्यूक्लियर परिवार वर्तमान आधुनिक समाज की आवश्यकताओं, जीवन शैली और आर्थिक परिस्थितियों के अनुरूप अधिक प्रभावी और व्यावहारिक पारिवारिक व्यवस्था है?

इन प्रश्नों के माध्यम से यह शोध यह समझने का प्रयास करता है कि पारिवारिक संरचना में हो रहे परिवर्तन केवल एक सामाजिक प्रवृत्ति नहीं हैं, बल्कि वे व्यापक सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया का हिस्सा हैं, जो भारतीय समाज के भविष्य को भी प्रभावित कर रहे हैं।

### 3. शोध उद्देश्य (Objectives of the Study)

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारतीय समाज में परिवार संरचना में हो रहे परिवर्तन, विशेषकर संयुक्त परिवार से न्यूक्लियर (एकल) परिवारों की ओर बढ़ते रुझान का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। परिवार एक मूलभूत सामाजिक संस्था होने के कारण इसमें होने वाले परिवर्तन समाज के अन्य सभी पक्षों—सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत जीवन—को प्रभावित करते हैं। आधुनिक समय में बदलती जीवन शैली, औद्योगीकरण, नगरीकरण और वैश्वीकरण जैसे कारकों ने परिवार की संरचना और कार्यप्रणाली को गहराई से प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों को समझना इस शोध का केंद्रीय उद्देश्य है।

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. एकल (न्यूक्लियर) परिवार की अवधारणा, प्रकृति एवं प्रमुख विशेषताओं को विस्तार से समझना और उसकी समाजशास्त्रीय व्याख्या करना।
2. भारतीय समाज में न्यूक्लियर परिवारों के बढ़ते प्रचलन के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं मनोवैज्ञानिक कारणों का अध्ययन करना।
3. एकल परिवारों के सामाजिक प्रभावों का विश्लेषण करना, विशेषकर बच्चों के समाजीकरण, महिलाओं की भूमिका और वृद्धजनों की स्थिति के संदर्भ में।
4. परिवार संरचना में आए आर्थिक परिवर्तनों की भूमिका का अध्ययन करना, जिसमें रोजगार के बदलते स्वरूप, आय के साधनों और जीवन-यापन की लागत का प्रभाव शामिल है।

5. आधुनिक भारतीय समाज में परिवार संस्था के भविष्य का मूल्यांकन करना तथा यह समझना कि आने वाले समय में परिवार के स्वरूप और कार्यों में किस प्रकार के परिवर्तन संभावित हैं।

इस प्रकार यह अध्ययन न केवल वर्तमान पारिवारिक संरचना को समझने का प्रयास करता है, बल्कि भविष्य में परिवार संस्था के संभावित विकास और उसके सामाजिक प्रभावों का भी विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

#### 4. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

परिवार और सामाजिक परिवर्तन पर समाजशास्त्र के क्षेत्र में अनेक विद्वानों ने व्यापक अध्ययन किए हैं। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि परिवार एक गतिशील सामाजिक संस्था है, जो समय, स्थान और सामाजिक परिस्थितियों के अनुसार अपने स्वरूप और कार्यों में परिवर्तन करती रहती है। विशेष रूप से औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा, वैश्वीकरण और तकनीकी विकास ने परिवार संरचना को गहराई से प्रभावित किया है।

टैल्कॉट पार्सन्स ने संरचनात्मक-कार्यात्मक दृष्टिकोण के आधार पर आधुनिक औद्योगिक समाज में न्यूक्लियर परिवार को सबसे अधिक उपयुक्त माना। उनके अनुसार औद्योगिक समाज में कार्य विभाजन, गतिशीलता और आर्थिक प्रतिस्पर्धा अधिक होती है, जिसके लिए छोटे परिवार अधिक अनुकूल होते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि न्यूक्लियर परिवार बच्चों के प्राथमिक समाजीकरण और वयस्क सदस्यों के भावनात्मक स्थिरीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

एम. एन. श्रीनिवास ने भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाओं का अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट किया कि भारतीय परिवार व्यवस्था परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाकर आगे बढ़ रही है। उनके अनुसार संस्कृतिकरण (Sanskritization) और पश्चिमीकरण (Westernization) जैसी प्रक्रियाओं ने भारतीय परिवार संरचना को प्रभावित किया है, लेकिन परिवार की मूल सामाजिक भूमिका अभी भी बनी हुई है।

इरावती कर्वे ने भारतीय नातेदारी प्रणाली और संयुक्त परिवार व्यवस्था का गहन अध्ययन किया। उनके अनुसार भारतीय परिवार केवल एक आर्थिक इकाई नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संबंधों, सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं का एक जटिल तंत्र है। उन्होंने यह भी बताया कि संयुक्त परिवार व्यवस्था भारतीय समाज में सामाजिक सुरक्षा और सांस्कृतिक निरंतरता का प्रमुख आधार रही है।

विलियम जे. गुड ने विश्व स्तर पर परिवार संरचनाओं के परिवर्तन का अध्ययन किया और यह निष्कर्ष दिया कि आधुनिकता के साथ-साथ संयुक्त परिवारों का विघटन और न्यूक्लियर परिवारों का विकास एक वैश्विक प्रवृत्ति है। उनके अनुसार औद्योगिक समाजों में परिवार का आकार छोटा हो जाता है और पारिवारिक संबंध अधिक व्यक्तिगत और भावनात्मक हो जाते हैं।

एंड्र्यू चेरलिन ने आधुनिक समाज में विवाह और परिवार के बदलते स्वरूप का अध्ययन किया। उन्होंने “deinstitutionalization of marriage” की अवधारणा दी, जिसके अनुसार आधुनिक समाज में विवाह और परिवार की पारंपरिक संरचनाएं कमजोर हो रही हैं और व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा विकल्पों की भूमिका बढ़ रही है।

आंद्रे बेतेय ने भारतीय समाज में वर्ग, जाति और परिवार संरचना के संबंधों का अध्ययन किया। उनके अनुसार भारतीय समाज में आधुनिकता के प्रभाव के बावजूद पारिवारिक संबंध सामाजिक संगठन का एक महत्वपूर्ण आधार बने हुए हैं, हालांकि उनके स्वरूप में परिवर्तन देखा जा रहा है।

ए. एम. शाह ने भारतीय परिवार पर किए गए अपने अध्ययनों में यह तर्क दिया कि संयुक्त परिवार और न्यूक्लियर परिवार को एक-दूसरे के पूर्ण विरोधी रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। उनके अनुसार भारतीय समाज में परिवार संरचना में परिवर्तन के साथ-साथ निरंतरता भी मौजूद रहती है, और दोनों प्रकार की संरचनाएं विभिन्न परिस्थितियों में सह-अस्तित्व में रहती हैं।

यंग और विलमोट ने परिवार के “symmetrical family” की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें आधुनिक परिवारों में पति-पत्नी के बीच भूमिकाओं का अधिक समान वितरण देखा जाता है। उनके अनुसार आधुनिक परिवारों में पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं में परिवर्तन आ रहा है और संबंध अधिक लोकतांत्रिक हो रहे हैं।

इन सभी अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकलता है कि परिवार संस्था एक स्थिर संरचना नहीं है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन के साथ निरंतर विकसित होने वाली संस्था है। भारतीय और वैश्विक दोनों संदर्भों में यह देखा गया है कि औद्योगीकरण, शिक्षा, नगरीकरण और वैश्वीकरण ने संयुक्त परिवारों के स्थान पर न्यूक्लियर परिवारों के विकास को बढ़ावा दिया है। हालांकि, परिवार के मूल सामाजिक कार्य—जैसे समाजीकरण, भावनात्मक सहयोग और सामाजिक सुरक्षा—अभी भी विभिन्न रूपों में कायम हैं।

## 5. एकल परिवार की अवधारणा

एकल परिवार (Nuclear Family) आधुनिक समाज में परिवार संरचना का एक महत्वपूर्ण और व्यापक रूप से प्रचलित स्वरूप है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से एकल परिवार वह परिवार है जिसमें मुख्यतः पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे शामिल होते हैं। इस प्रकार के परिवार में विस्तृत रिश्तेदारों जैसे दादा-दादी, चाचा-चाची या अन्य पारिवारिक सदस्यों की दैनिक जीवन में प्रत्यक्ष और नियमित भूमिका अपेक्षाकृत सीमित होती है। एकल परिवार मुख्य रूप से छोटे, स्वतंत्र और केंद्रित पारिवारिक इकाई के रूप में कार्य करता है, जिसमें पारिवारिक संबंधों का दायरा सीमित लेकिन अधिक प्रत्यक्ष होता है।

आधुनिक समाज में एकल परिवारों का विकास सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का परिणाम माना जाता है। औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा का विस्तार, रोजगार की गतिशीलता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बढ़ती प्रवृत्ति ने इस परिवार संरचना को विशेष रूप से बढ़ावा दिया है। आज के समय में यह परिवार व्यवस्था शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में सबसे सामान्य रूप से देखी जाती है।

एकल परिवार में पति-पत्नी और बच्चों के बीच संबंध अधिक प्रत्यक्ष, घनिष्ठ और जिम्मेदारी आधारित होते हैं। इस परिवार संरचना में निर्णय लेने की प्रक्रिया अपेक्षाकृत सरल होती है और पारिवारिक जीवन अधिक संगठित एवं नियंत्रित रूप में संचालित होता है। इसके साथ ही यह परिवार व्यवस्था आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं के अनुरूप अधिक लचीली और व्यावहारिक मानी जाती है।

### एकल परिवार की प्रमुख विशेषताएँ

#### 1. सीमित सदस्य संख्या

एकल परिवार की सबसे प्रमुख विशेषता इसकी सीमित सदस्य संख्या है। इसमें सामान्यतः पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे शामिल होते हैं। सदस्यों की संख्या कम होने के कारण परिवार के भीतर संवाद अधिक स्पष्ट, प्रत्यक्ष और प्रभावी होता है।

कम सदस्यों वाले परिवार में निर्णय लेने की प्रक्रिया भी अपेक्षाकृत सरल होती है, क्योंकि इसमें अनेक लोगों की सहमति या जटिल पारिवारिक चर्चाओं की आवश्यकता नहीं होती। इससे परिवार में कार्यकुशलता और त्वरित निर्णय क्षमता विकसित होती है। साथ ही, माता-पिता बच्चों की आवश्यकताओं, शिक्षा और स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

## 2. व्यक्तिगत स्वतंत्रता

एकल परिवारों में व्यक्तियों को अपने जीवन से संबंधित निर्णय लेने की अधिक स्वतंत्रता प्राप्त होती है। पति-पत्नी अपने करियर, जीवनशैली, बच्चों की शिक्षा और पारिवारिक योजनाओं से जुड़े निर्णय स्वयं या आपसी सहमति से ले सकते हैं।

इस प्रकार की स्वतंत्रता व्यक्तित्व विकास, आत्मनिर्भरता और जिम्मेदारी की भावना को बढ़ावा देती है। विशेषकर युवा पीढ़ी अपने जीवन को अपनी इच्छाओं और क्षमताओं के अनुसार आकार देने में सक्षम होती है। हालांकि यह स्वतंत्रता परिवार में पारस्परिक समझ और सहयोग पर भी निर्भर करती है।

## 3. आर्थिक स्वतंत्रता

एकल परिवार की एक महत्वपूर्ण विशेषता आर्थिक स्वतंत्रता है। इस परिवार व्यवस्था में पति-पत्नी सामान्यतः अपनी आय, व्यय और बचत का प्रबंधन स्वयं करते हैं। आर्थिक निर्णयों में बाहरी पारिवारिक हस्तक्षेप अपेक्षाकृत कम होता है।

इससे परिवार अपने संसाधनों का उपयोग अपनी आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुसार कर सकता है। आर्थिक योजना बनाना सरल हो जाता है और वित्तीय निर्णय तेजी से लिए जा सकते हैं। हालांकि इसके साथ ही आर्थिक जिम्मेदारी भी केवल सीमित सदस्यों पर केंद्रित होती है, जिससे संकट की स्थिति में चुनौतियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।

## 4. निजी जीवन को महत्व

एकल परिवारों में निजी जीवन और व्यक्तिगत आवश्यकताओं को अधिक महत्व दिया जाता है। पति-पत्नी अपने संबंधों, बच्चों के पालन-पोषण और व्यक्तिगत लक्ष्यों पर अधिक केंद्रित रहते हैं।

आधुनिक समाज में व्यक्ति अपने करियर विकास, आत्म-संतुष्टि और जीवनशैली को प्राथमिकता देने लगा है, और एकल परिवार इस प्रकार की सोच के अनुरूप अधिक उपयुक्त माना जाता है। इस परिवार संरचना में व्यक्तिगत गोपनीयता और स्वतंत्रता को भी अधिक महत्व प्राप्त होता है।

हालांकि निजी जीवन पर अधिक ध्यान केंद्रित करने से कभी-कभी सामाजिक और पारिवारिक सहयोग की भावना सीमित हो सकती है, इसलिए संतुलन बनाए रखना आवश्यक होता है।

## 7. भारत में एकल परिवारों के बढ़ने के कारण

भारत में पारंपरिक रूप से संयुक्त परिवार व्यवस्था का व्यापक प्रचलन रहा है, लेकिन पिछले कुछ दशकों में सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की तीव्र प्रक्रिया ने परिवार संरचना को बदल दिया है। संयुक्त परिवारों की तुलना में एकल (न्यूक्लियर) परिवारों की संख्या में निरंतर वृद्धि देखी जा रही है। यह परिवर्तन किसी एक कारण का परिणाम नहीं है, बल्कि विभिन्न सामाजिक और आर्थिक कारकों के सम्मिलित प्रभाव का परिणाम है।

आधुनिक भारतीय समाज में एकल परिवारों के बढ़ते प्रचलन को समझने के लिए नगरीकरण, औद्योगीकरण, शिक्षा, महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता और बदलती जीवन शैली जैसे प्रमुख कारकों का अध्ययन आवश्यक है। इन सभी कारकों ने मिलकर परिवार की पारंपरिक संरचना को प्रभावित किया है और उसे अधिक स्वतंत्र तथा छोटे आकार वाले परिवारों की ओर प्रेरित किया है।

### 7.1 नगरीकरण का प्रभाव (Impact of Urbanization)

नगरीकरण एकल परिवारों के विकास का एक प्रमुख कारण है। ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर जनसंख्या का तेजी से पलायन परिवार संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन लेकर आया है। शहरों में सीमित आवासीय स्थान, अधिक जनसंख्या घनत्व और उच्च जीवन-यापन लागत के कारण संयुक्त परिवार की तुलना में छोटे परिवार अधिक व्यावहारिक प्रतीत होते हैं।

शहरी जीवन शैली तेज, प्रतिस्पर्धात्मक और व्यस्त होती है, जिसमें व्यक्तियों के पास बड़े परिवारों की सामूहिक जिम्मेदारियों के लिए सीमित समय और संसाधन होते हैं। ऐसे वातावरण में एकल परिवार अधिक सुविधाजनक और संगठित जीवन प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, शहरी क्षेत्रों में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और निजी जीवन को अधिक महत्व दिया जाता है, जो न्यूक्लियर परिवारों के विकास को और अधिक प्रोत्साहित करता है।

### 7.2 औद्योगीकरण और रोजगार (Industrialization and Employment)

औद्योगीकरण ने भारत की आर्थिक संरचना में व्यापक परिवर्तन किया है। औद्योगिक विकास के कारण रोजगार के अवसर मुख्य रूप से शहरी और औद्योगिक क्षेत्रों में केंद्रित हो गए हैं। इसके परिणामस्वरूप ग्रामीण क्षेत्रों से युवा पीढ़ी रोजगार की तलाश में शहरों की ओर प्रवास करने लगी।

रोजगार के लिए स्थान परिवर्तन और कार्य की गतिशील प्रकृति ने संयुक्त परिवारों के साथ स्थायी रूप से रहना कठिन बना दिया है। नौकरीपेशा व्यक्तियों के लिए न्यूक्लियर परिवार अधिक

व्यावहारिक विकल्प बन गया है, क्योंकि यह उन्हें कार्यस्थल के निकट रहने और अपने परिवार को बेहतर सुविधाएं प्रदान करने में सहायता करता है।

इस प्रकार औद्योगीकरण ने पारंपरिक कृषि आधारित संयुक्त परिवार व्यवस्था को कमजोर कर न्यूक्लियर परिवारों के विकास को बढ़ावा दिया है।

### **7.3 शिक्षा का विस्तार (Expansion of Education)**

शिक्षा का विस्तार भी एकल परिवारों के बढ़ने का एक महत्वपूर्ण कारण है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली ने व्यक्तियों में तार्किक सोच, आत्मनिर्भरता और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता को विकसित किया है। शिक्षित युवा पीढ़ी पारंपरिक सामाजिक और पारिवारिक नियंत्रण की तुलना में व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आत्म-अभिव्यक्ति को अधिक महत्व देने लगी है।

शिक्षा के माध्यम से व्यक्तियों को रोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त हुए हैं, जिससे वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बने हैं। आर्थिक स्वतंत्रता ने उन्हें अपने जीवन संबंधी निर्णय स्वयं लेने की क्षमता प्रदान की है, जिससे संयुक्त परिवार की पारंपरिक संरचना में परिवर्तन आया है।

इस प्रकार शिक्षा ने न केवल आर्थिक स्थिति को बदला है, बल्कि पारिवारिक संबंधों और मूल्यों में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किया है।

### **7.4 महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता (Economic Independence of Women)**

महिलाओं की शिक्षा और रोजगार में बढ़ती भागीदारी ने परिवार संरचना को गहराई से प्रभावित किया है। पारंपरिक समाज में महिलाओं की भूमिका मुख्यतः घरेलू कार्यों तक सीमित थी, लेकिन आधुनिक समय में वे शिक्षा, प्रशासन, व्यवसाय और अन्य क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं।

कामकाजी महिलाएं न्यूक्लियर परिवार को अधिक व्यावहारिक मानती हैं, क्योंकि इसमें घरेलू और व्यावसायिक जिम्मेदारियों के बीच संतुलन बनाना अपेक्षाकृत आसान होता है। बड़े संयुक्त परिवारों में पारंपरिक अपेक्षाएं और भूमिकाएं कई बार कामकाजी महिलाओं के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकती हैं।

महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता ने उन्हें निर्णय लेने में समान भागीदारी और पारिवारिक जीवन में अधिक अधिकार प्रदान किए हैं, जिससे परिवार का स्वरूप अधिक लोकतांत्रिक और छोटा होता जा रहा है।

### 7.5 बदलती जीवन शैली (Changing Lifestyle)

आधुनिक समाज में जीवन शैली में व्यापक परिवर्तन देखने को मिल रहा है। आज के समय में व्यक्ति व्यक्तिगत उपलब्धियों, करियर विकास, आत्मनिर्भरता और निजी स्वतंत्रता को अधिक महत्व देने लगा है। इस प्रकार की सोच ने पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था को प्रभावित किया है।

उपभोक्तावादी संस्कृति, तकनीकी विकास और वैश्वीकरण ने लोगों की आकांक्षाओं और आवश्यकताओं को बढ़ाया है। लोग अब अधिक व्यक्तिगत स्थान, गोपनीयता और स्वतंत्रता की अपेक्षा करने लगे हैं, जो न्यूक्लियर परिवार की संरचना के अनुकूल है।

इसके अतिरिक्त, आधुनिक जीवन की तेज गति और व्यस्त दिनचर्या के कारण बड़े परिवारों की सामूहिक जिम्मेदारियों का निर्वहन कठिन हो गया है, जिससे एकल परिवारों की प्रवृत्ति और अधिक बढ़ी है।

## 8. एकल परिवारों के सामाजिक प्रभाव

भारत में एकल (न्यूक्लियर) परिवारों के बढ़ते प्रचलन ने सामाजिक संरचना, पारिवारिक संबंधों और व्यक्ति के जीवन पर व्यापक प्रभाव डाला है। यह प्रभाव सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूपों में देखा जा सकता है। एक ओर जहाँ यह परिवार व्यवस्था आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं के अनुरूप अधिक सुविधाजनक और स्वतंत्रता प्रदान करने वाली प्रतीत होती है, वहीं दूसरी ओर इसके कारण कुछ सामाजिक और भावनात्मक चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं।

### सकारात्मक प्रभाव (Positive Effects)

#### 1. व्यक्तिगत स्वतंत्रता में वृद्धि

एकल परिवारों का एक प्रमुख सकारात्मक प्रभाव व्यक्तिगत स्वतंत्रता में वृद्धि है। इस प्रकार के परिवारों में पति-पत्नी को अपने जीवन से संबंधित निर्णय लेने की अधिक स्वतंत्रता प्राप्त होती

है। वे अपने करियर, जीवनशैली, बच्चों की शिक्षा और पारिवारिक योजनाओं से जुड़े निर्णय आपसी सहमति के आधार पर स्वतंत्र रूप से ले सकते हैं।

इस स्वतंत्रता के कारण व्यक्ति में आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास और निर्णय क्षमता का विकास होता है। आधुनिक समाज में व्यक्तिगत स्वतंत्रता को एक महत्वपूर्ण मूल्य माना जाता है, और न्यूक्लियर परिवार इस मूल्य को साकार करने में सहायक होता है।

## 2. पारिवारिक संघर्ष में कमी

एकल परिवारों में सदस्यों की संख्या सीमित होने के कारण पारिवारिक मतभेद और संघर्ष की संभावना अपेक्षाकृत कम हो जाती है। संयुक्त परिवारों में जहां अनेक पीढ़ियां और विभिन्न विचारधाराएं साथ रहती हैं, वहां अक्सर निर्णयों को लेकर मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं।

इसके विपरीत, न्यूक्लियर परिवार में पति-पत्नी और बच्चों के बीच प्रत्यक्ष संवाद और समझ अधिक होती है, जिससे निर्णय प्रक्रिया सरल होती है और विवाद की संभावना कम हो जाती है। इससे पारिवारिक वातावरण अधिक शांतिपूर्ण और संतुलित बन सकता है।

## 3. बच्चों पर अधिक ध्यान

एकल परिवारों में माता-पिता अपने सीमित बच्चों पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। वे बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, मानसिक विकास और करियर निर्माण पर अधिक समय और संसाधन निवेश कर सकते हैं।

इस प्रकार बच्चों को बेहतर शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास के अवसर प्राप्त हो सकते हैं। माता-पिता की सीधी देखरेख के कारण बच्चों की आवश्यकताओं को अधिक प्रभावी ढंग से पूरा किया जा सकता है।

---

## नकारात्मक प्रभाव (Negative Effects)

### 1. सामाजिक अलगाव

एकल परिवारों का एक प्रमुख नकारात्मक प्रभाव सामाजिक अलगाव है। संयुक्त परिवारों की तुलना में न्यूक्लियर परिवारों में विस्तृत पारिवारिक सहयोग और सामाजिक संपर्क सीमित हो जाता है।

इस स्थिति में व्यक्ति कभी-कभी अकेलेपन और भावनात्मक असुरक्षा का अनुभव कर सकता है। आधुनिक जीवन की व्यस्तता और सीमित सामाजिक संपर्क इस समस्या को और बढ़ा सकते हैं। विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में यह समस्या अधिक देखने को मिलती है।

## 2. वृद्धजनों की स्थिति

संयुक्त परिवार व्यवस्था के कमजोर होने से वृद्ध माता-पिता की देखभाल एक गंभीर सामाजिक समस्या बन गई है। पारंपरिक संयुक्त परिवारों में वृद्ध सदस्यों को परिवार के भीतर सम्मान, सुरक्षा और भावनात्मक सहयोग प्राप्त होता था।

लेकिन न्यूक्लियर परिवारों में युवा पीढ़ी अक्सर रोजगार या अन्य कारणों से अलग स्थानों पर रहने लगती है, जिससे वृद्धजनों को अकेले रहना पड़ सकता है। इससे उनकी भावनात्मक और सामाजिक सुरक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

## 3. बच्चों के समाजीकरण में परिवर्तन

एकल परिवारों में बच्चों का समाजीकरण अपेक्षाकृत सीमित दायरे में होता है। उन्हें दादा-दादी, चाचा-चाची और अन्य विस्तृत पारिवारिक सदस्यों से मिलने वाले अनुभव, मूल्य और पारंपरिक ज्ञान कम प्राप्त हो पाते हैं।

संयुक्त परिवारों में बच्चों को विभिन्न पीढ़ियों के साथ रहने का अवसर मिलता था, जिससे उनके सामाजिक व्यवहार और सांस्कृतिक समझ का व्यापक विकास होता था। न्यूक्लियर परिवारों में यह अनुभव सीमित हो सकता है, जिससे उनके समाजीकरण की प्रक्रिया में परिवर्तन आता है।

## 9. आर्थिक प्रभाव

एकल (न्यूक्लियर) परिवारों के बढ़ते प्रचलन ने भारतीय समाज के आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था में जहां आय और संसाधनों का सामूहिक उपयोग होता था, वहीं एकल परिवारों में आर्थिक निर्णय और प्रबंधन मुख्यतः पति-पत्नी तक सीमित हो जाता है। इस परिवर्तन ने आर्थिक जीवन को अधिक व्यक्तिगत, नियोजित और गतिशील बनाया है। इसके प्रभाव को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों दृष्टिकोणों से समझा जा सकता है।

### सकारात्मक आर्थिक प्रभाव

एकल परिवारों का सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक लाभ यह है कि इसमें आय और खर्च का बेहतर नियोजन संभव होता है। सीमित सदस्यों वाले परिवार में आवश्यकताओं की संख्या अपेक्षाकृत कम होती है, जिससे परिवार अपनी आय का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग कर सकता है। इससे बचत और वित्तीय योजना बनाना भी सरल हो जाता है।

इसके अतिरिक्त, एकल परिवारों में आर्थिक निर्णय लेने की स्वतंत्रता अधिक होती है। पति-पत्नी अपनी आय, निवेश, शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य आवश्यकताओं से संबंधित निर्णय बिना अधिक बाहरी हस्तक्षेप के स्वयं ले सकते हैं। यह स्वतंत्रता आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती है और निर्णय प्रक्रिया को तेज बनाती है।

एक अन्य महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव जीवन स्तर में सुधार है। छोटे परिवारों में संसाधनों का उपयोग सीमित व्यक्तियों पर केंद्रित होता है, जिससे प्रति व्यक्ति उपभोग क्षमता बढ़ती है। इससे परिवार बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं और आधुनिक सुविधाओं का लाभ उठा सकता है, जो समग्र जीवन स्तर को ऊँचा उठाने में सहायक होता है।

### नकारात्मक आर्थिक प्रभाव

एकल परिवारों का एक प्रमुख नकारात्मक आर्थिक प्रभाव आवास और जीवन-यापन की लागत में वृद्धि है। संयुक्त परिवारों में जहां संसाधनों और खर्चों का साझा उपयोग होता था, वहीं एकल परिवारों में प्रत्येक इकाई को अलग आवास, सुविधाएं और संसाधन जुटाने पड़ते हैं, जिससे कुल खर्च बढ़ जाता है।

इसके अलावा, बच्चों की देखभाल के लिए अतिरिक्त खर्च भी एक महत्वपूर्ण आर्थिक चुनौती है। संयुक्त परिवारों में दादा-दादी और अन्य सदस्य बच्चों की देखभाल में सहयोग करते थे, जिससे लागत कम होती थी। लेकिन एकल परिवारों में यह जिम्मेदारी मुख्यतः माता-पिता पर आ जाती है, जिससे बाल-देखभाल, शिक्षा और अन्य आवश्यकताओं पर अधिक खर्च करना पड़ता है।

एक अन्य महत्वपूर्ण नकारात्मक प्रभाव सामाजिक सुरक्षा की कमी है। संयुक्त परिवारों में आर्थिक संकट, बीमारी या बेरोजगारी की स्थिति में परिवार के अन्य सदस्य सहायता प्रदान करते थे। लेकिन एकल परिवारों में यह सामूहिक आर्थिक सुरक्षा अपेक्षाकृत कमजोर होती है, जिससे आकस्मिक परिस्थितियों में परिवार पर आर्थिक दबाव अधिक बढ़ सकता है।

## 10. सांस्कृतिक प्रभाव

भारतीय समाज में परिवार को केवल एक सामाजिक इकाई नहीं, बल्कि सांस्कृतिक मूल्यों, परंपराओं और सामाजिक विरासत के संरक्षण का प्रमुख माध्यम माना जाता रहा है। परिवार के माध्यम से ही रीति-रिवाज, धार्मिक आस्थाएँ, नैतिक मूल्य और सांस्कृतिक परंपराएँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानांतरित होती हैं। इस संदर्भ में एकल (न्यूक्लियर) परिवारों के बढ़ते प्रचलन ने सांस्कृतिक संरचना और उसके हस्तांतरण की प्रक्रिया पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है।

एकल परिवारों के बढ़ने से पारंपरिक सांस्कृतिक हस्तांतरण की प्रक्रिया अपेक्षाकृत कमजोर हुई है। संयुक्त परिवारों में बच्चों को दादा-दादी, चाचा-चाची और अन्य बुजुर्ग सदस्यों से सीधे पारंपरिक ज्ञान, लोककथाएँ, धार्मिक रीति-रिवाज और जीवन के अनुभव प्राप्त होते थे। लेकिन एकल परिवारों में यह बहु-पीढ़ीय संपर्क सीमित होने के कारण सांस्कृतिक आदान-प्रदान की गति कम हो गई है। परिणामस्वरूप, कई पारंपरिक मूल्य और रीति-रिवाज नई पीढ़ी तक पूरी तरह और प्रभावी रूप से नहीं पहुँच पाते।

इसके बावजूद, एकल परिवारों ने सांस्कृतिक परिवर्तन की एक नई दिशा भी प्रदान की है। आधुनिक पीढ़ी अब शिक्षा, तकनीकी विकास और वैश्विक संपर्क के माध्यम से नए मूल्यों को अपनाने लगी है। इनमें समानता, व्यक्तिगत स्वतंत्रता, लैंगिक समानता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण जैसे आधुनिक सांस्कृतिक मूल्य प्रमुख हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि एकल परिवारों ने पारंपरिक और आधुनिक संस्कृति के बीच एक संक्रमणकालीन स्थिति उत्पन्न की है, जिसमें पुरानी परंपराओं के साथ नए मूल्यों का सह-अस्तित्व देखा जा रहा है।

इसके अतिरिक्त यह भी देखा गया है कि एकल परिवारों में सांस्कृतिक उत्सवों और पारंपरिक आयोजनों का स्वरूप पहले की तुलना में अधिक सीमित और निजी हो गया है। बड़े पारिवारिक स्तर पर मनाए जाने वाले त्योहार अब छोटे पारिवारिक दायरे में मनाए जाते हैं, जिससे सामूहिक सांस्कृतिक सहभागिता में कमी आई है।

इसके साथ ही, मीडिया, इंटरनेट और सोशल नेटवर्किंग के बढ़ते प्रभाव ने भी सांस्कृतिक परिवर्तन की गति को तेज कर दिया है। नई पीढ़ी वैश्विक संस्कृति से अधिक प्रभावित हो रही है, जिससे स्थानीय और पारंपरिक सांस्कृतिक पहचान में परिवर्तन देखने को मिलता है।

एकल परिवारों में समय की कमी और व्यस्त जीवन शैली के कारण बच्चों को पारंपरिक कहानियाँ, लोकगीत और सांस्कृतिक शिक्षाएँ पहले की तरह व्यापक रूप से नहीं मिल पातीं। इसका प्रभाव उनके सांस्कृतिक ज्ञान और परंपरागत समझ पर पड़ता है।

हालांकि, एक सकारात्मक पहलू यह भी है कि एकल परिवारों ने सांस्कृतिक विविधता और खुले विचारों को बढ़ावा दिया है। इससे समाज में सहिष्णुता, समानता और आधुनिक सोच को स्वीकार करने की प्रवृत्ति मजबूत हुई है।

### 11. महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन

एकल (न्यूक्लियर) परिवारों के उदय ने भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका में गहरे और बहुआयामी परिवर्तन उत्पन्न किए हैं। पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका मुख्यतः घरेलू दायित्वों, बच्चों की देखभाल, बुजुर्गों की सेवा और पारिवारिक जिम्मेदारियों तक सीमित मानी जाती थी। उस समय परिवार की संरचना ऐसी थी जिसमें निर्णय लेने का अधिकार प्रायः पुरुष सदस्यों के हाथों में केंद्रित रहता था, जबकि महिलाओं की भागीदारी अपेक्षाकृत सीमित होती थी। परंतु आधुनिक एकल परिवार व्यवस्था ने इस स्थिति में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाया है।

आधुनिक समय में महिलाओं को शिक्षा, प्रशिक्षण और रोजगार के अधिक अवसर प्राप्त हुए हैं, जिसके परिणामस्वरूप वे धीरे-धीरे आत्मनिर्भर बन रही हैं। शिक्षा के प्रसार ने महिलाओं में आत्मविश्वास, जागरूकता और निर्णय क्षमता को बढ़ाया है। आज महिलाएं केवल गृहिणी की भूमिका तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे प्रशासन, शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, व्यवसाय, तकनीकी क्षेत्र और अन्य अनेक क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भागीदारी कर रही हैं। इस परिवर्तन ने न केवल महिलाओं की सामाजिक स्थिति को मजबूत किया है, बल्कि उन्हें आर्थिक रूप से भी सशक्त बनाया है।

एकल परिवारों में निर्णय लेने की प्रक्रिया अपेक्षाकृत अधिक केंद्रित और साझेदारी आधारित होती है। पति और पत्नी दोनों मिलकर पारिवारिक निर्णय लेते हैं, जिससे महिलाओं को अपने विचार व्यक्त करने और निर्णय प्रक्रिया में भाग लेने का अधिक अवसर मिलता है। इस प्रकार परिवार में लैंगिक समानता की भावना को बढ़ावा मिला है और महिलाओं का आत्मविश्वास तथा सामाजिक सम्मान भी बढ़ा है।

इसके अतिरिक्त, आधुनिक डिजिटल युग ने भी महिलाओं की भूमिका को और अधिक विस्तारित किया है। इंटरनेट, सोशल मीडिया और ऑनलाइन रोजगार के अवसरों ने महिलाओं को घर से कार्य करने (work from home) की सुविधा प्रदान की है, जिससे वे घरेलू और व्यावसायिक जीवन

के बीच बेहतर संतुलन स्थापित कर पा रही हैं। यह परिवर्तन विशेष रूप से एकल परिवारों में अधिक प्रभावी रूप से देखने को मिलता है।

साथ ही, एकल परिवारों में बच्चों की शिक्षा और परवरिश में भी महिलाओं की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण हो गई है, क्योंकि परिवार का आकार छोटा होने के कारण बच्चों पर प्रत्यक्ष ध्यान केंद्रित करना आसान हो जाता है। इससे महिलाओं की जिम्मेदारियों का स्वरूप केवल घरेलू कार्यों से आगे बढ़कर शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक मार्गदर्शन तक विस्तृत हो गया है।

हालांकि इस परिवर्तन के कुछ नकारात्मक पहलू भी सामने आए हैं। एकल परिवारों में सहयोगी सदस्यों, जैसे दादा-दादी या अन्य रिश्तेदारों की अनुपस्थिति के कारण घरेलू कार्यों और बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी मुख्यतः पति-पत्नी पर ही आ जाती है। विशेषकर कामकाजी महिलाओं के लिए यह स्थिति अधिक चुनौतीपूर्ण हो जाती है, क्योंकि उन्हें घरेलू और व्यावसायिक दोनों भूमिकाओं का संतुलन बनाना पड़ता है। कई बार सामाजिक समर्थन की कमी के कारण तनाव और कार्यभार में वृद्धि भी देखी जाती है।

इसके अतिरिक्त, एकल परिवारों में सामाजिक संपर्क सीमित होने के कारण महिलाओं को पारिवारिक और सामाजिक सहयोग अपेक्षाकृत कम मिल पाता है, जिससे उनकी भूमिका अधिक व्यक्तिगत और जिम्मेदारी-आधारित हो जाती है।

## महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन

### 1. आत्मनिर्भरता में वृद्धि

एकल परिवारों ने महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से आत्मनिर्भर बनने का महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किया है। छोटे परिवारों में निर्णय लेने की प्रक्रिया अपेक्षाकृत सरल होती है, जिससे महिलाएं अपने जीवन से जुड़े निर्णय स्वयं या अपने जीवनसाथी के साथ मिलकर स्वतंत्र रूप से ले सकती हैं। शिक्षा और रोजगार के अवसरों के कारण महिलाएं अब आर्थिक रूप से किसी अन्य पर निर्भर रहने के बजाय स्वयं अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हो रही हैं। इस आत्मनिर्भरता ने उनके आत्मविश्वास और सामाजिक स्थिति दोनों को मजबूत किया है।

### 2. आर्थिक योगदान में वृद्धि

आधुनिक एकल परिवारों में महिलाएं अब केवल गृहिणी की भूमिका तक सीमित नहीं हैं, बल्कि परिवार की आय में सक्रिय योगदान दे रही हैं। वे नौकरी, व्यवसाय, फ्रीलांसिंग और अन्य आय-

सृजन गतिविधियों के माध्यम से परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ कर रही हैं। इससे परिवार की वित्तीय स्थिरता बढ़ी है और जीवन स्तर में सुधार हुआ है। आर्थिक योगदान के कारण महिलाओं की निर्णय प्रक्रिया में भागीदारी भी बढ़ी है।

### 3. शिक्षा के प्रति जागरूकता

एकल परिवारों में महिलाएं स्वयं की शिक्षा के साथ-साथ अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति अधिक जागरूक हुई हैं। सीमित पारिवारिक संरचना के कारण वे बच्चों की पढ़ाई, अनुशासन और करियर निर्माण पर अधिक ध्यान दे पाती हैं। इससे परिवार में शिक्षा के महत्व को बढ़ावा मिला है और एक शिक्षित एवं जागरूक समाज के निर्माण की प्रक्रिया मजबूत हुई है। महिलाएं अब शिक्षा को केवल औपचारिकता नहीं, बल्कि सामाजिक उन्नति का माध्यम मानती हैं।

### 4. नेतृत्व क्षमता का विकास

आधुनिक एकल परिवारों में महिलाओं को निर्णय लेने और पारिवारिक जिम्मेदारियों में भागीदारी का अधिक अवसर मिला है। इससे उनकी नेतृत्व क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वे अब केवल पालन-पोषण तक सीमित नहीं हैं, बल्कि परिवार के आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक निर्णयों में भी सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। यह परिवर्तन उनके आत्मविश्वास और प्रबंधन क्षमता को भी बढ़ाता है।

### 5. सामाजिक पहचान में सुधार

महिलाओं की सामाजिक स्थिति में सकारात्मक परिवर्तन आया है। अब वे समाज में केवल पारिवारिक पहचान तक सीमित नहीं हैं, बल्कि अपनी व्यक्तिगत पहचान भी स्थापित कर रही हैं। शिक्षा, नौकरी और सामाजिक सहभागिता के माध्यम से महिलाएं समाज में एक स्वतंत्र और सम्मानजनक स्थान प्राप्त कर रही हैं। इससे लैंगिक समानता की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है।

### 6. डिजिटल सशक्तिकरण

डिजिटल युग ने महिलाओं को नए अवसर प्रदान किए हैं। इंटरनेट, मोबाइल एप्लिकेशन और सोशल मीडिया के माध्यम से महिलाएं शिक्षा, रोजगार, जानकारी और नेटवर्किंग से जुड़ रही हैं। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ने उन्हें घर बैठे काम करने, सीखने और व्यवसाय शुरू करने के अवसर

दिए हैं। यह डिजिटल सशक्तिकरण विशेष रूप से एकल परिवारों में अधिक प्रभावी साबित हुआ है।

## 7. उद्यमिता (Entrepreneurship) में भागीदारी

महिलाएं अब छोटे व्यवसायों, स्टार्टअप्स, ऑनलाइन व्यापार और घरेलू उद्योगों के माध्यम से उद्यमिता की ओर तेजी से बढ़ रही हैं। एकल परिवारों में स्वतंत्र निर्णय लेने की सुविधा के कारण वे अपने व्यवसायिक विचारों को आसानी से लागू कर पा रही हैं। इससे न केवल उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है, बल्कि रोजगार सृजन में भी योगदान बढ़ा है।

## 8. स्वास्थ्य और स्व-देखभाल पर ध्यान

आधुनिक महिलाएं अपने स्वास्थ्य, मानसिक संतुलन और जीवन गुणवत्ता के प्रति अधिक जागरूक हुई हैं। एकल परिवारों में जिम्मेदारियों के साथ-साथ वे अपने व्यक्तिगत स्वास्थ्य पर भी ध्यान दे रही हैं। नियमित व्यायाम, पोषण, मानसिक स्वास्थ्य और स्व-देखभाल की आदतें उनके जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन रही हैं। यह परिवर्तन उनके समग्र विकास में सहायक है।

## 9. समानता की भावना का विकास

एकल परिवारों में पुरुष और महिला के बीच समानता की भावना को बढ़ावा मिला है। निर्णय प्रक्रिया में साझेदारी, आर्थिक योगदान और जिम्मेदारियों के साझा वितरण के कारण लैंगिक समानता मजबूत हुई है। इससे पारंपरिक पितृसत्तात्मक संरचना में धीरे-धीरे बदलाव देखने को मिल रहा है और महिलाओं की स्थिति अधिक सशक्त हो रही है।

## 10. कार्य-जीवन संतुलन (Work-Life Balance)

महिलाएं अब अपने पेशेवर और पारिवारिक जीवन के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास कर रही हैं। हालांकि यह एक चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया है, फिर भी एकल परिवारों की संरचना उन्हें अपेक्षाकृत अधिक लचीलापन प्रदान करती है। समय प्रबंधन, डिजिटल कार्य व्यवस्था और छोटे परिवारों की जिम्मेदारी इस संतुलन को बनाए रखने में सहायता करती है, लेकिन कई बार कार्यभार अधिक होने के कारण यह संतुलन बनाए रखना कठिन भी हो जाता है।

## 12. समाजशास्त्रीय विश्लेषण

समाजशास्त्रीय दृष्टि से एकल (न्यूक्लियर) परिवार आधुनिक सामाजिक परिवर्तन और आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण परिणाम है। परिवार केवल एक जैविक या भावनात्मक इकाई नहीं है, बल्कि यह समाज की संरचना, आर्थिक व्यवस्था और सांस्कृतिक मूल्यों से गहराई से जुड़ी हुई एक सामाजिक संस्था है। जब समाज में औद्योगिकीकरण, नगरीकरण, शिक्षा का विस्तार और वैश्वीकरण जैसे परिवर्तन होते हैं, तो उनका प्रत्यक्ष प्रभाव परिवार की संरचना और कार्यप्रणाली पर भी पड़ता है। इसलिए एकल परिवारों के विकास को सामाजिक परिवर्तन के व्यापक संदर्भ में समझना आवश्यक है।

टैल्कोट पार्सन्स के संरचनात्मक-कार्यात्मक (Structural-Functional) दृष्टिकोण के अनुसार समाज की प्रत्येक संस्था एक विशेष कार्य करती है और समाज की स्थिरता बनाए रखने में योगदान देती है। इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो परिवार भी समाजीकरण, भावनात्मक समर्थन और सामाजिक नियंत्रण जैसे महत्वपूर्ण कार्य करता है। पार्सन्स के अनुसार आधुनिक औद्योगिक समाज में न्यूक्लियर परिवार अधिक उपयुक्त है क्योंकि यह छोटे, गतिशील और लचीले स्वरूप में होता है, जो बदलती सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों के साथ आसानी से अनुकूलित हो सकता है। उनके अनुसार औद्योगिक समाज में व्यक्तियों को स्थान परिवर्तन और रोजगार गतिशीलता की आवश्यकता होती है, जिसे एकल परिवार अधिक प्रभावी ढंग से पूरा करता है।

आधुनिकीकरण (Modernization) सिद्धांत के अनुसार जैसे-जैसे समाज परंपरागत से आधुनिक संरचना की ओर बढ़ता है, वैसे-वैसे परिवार का स्वरूप भी बदलता है। इस सिद्धांत के अनुसार औद्योगिक और शहरी समाजों में छोटे परिवार अधिक व्यावहारिक और प्रभावी होते हैं, क्योंकि वे अधिक गतिशील, स्वतंत्र और आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होते हैं। आधुनिक समाज में व्यक्ति अपने करियर, शिक्षा और व्यक्तिगत विकास को प्राथमिकता देने लगा है, जिससे न्यूक्लियर परिवारों की आवश्यकता और स्वीकार्यता बढ़ी है। इस प्रकार एकल परिवार आधुनिक सामाजिक व्यवस्था की आवश्यकताओं के अनुरूप एक अनुकूल संरचना के रूप में विकसित हुआ है।

वहीं संघर्षवादी (Conflict) दृष्टिकोण परिवार संस्था को सामाजिक असमानताओं, शक्ति संबंधों और आर्थिक हितों के संदर्भ में देखता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार परिवार केवल एक सहयोगात्मक संस्था नहीं है, बल्कि इसमें शक्ति, नियंत्रण और संसाधनों के वितरण से जुड़े असमान संबंध भी मौजूद होते हैं। संयुक्त परिवार से न्यूक्लियर परिवार की ओर परिवर्तन को कुछ विद्वान आर्थिक स्वतंत्रता, व्यक्तिगत नियंत्रण और संसाधनों के सीमित वितरण के संदर्भ में भी देखते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार परिवार में महिलाओं, बच्चों और वृद्धजनों की स्थिति भी सामाजिक-आर्थिक संरचना से प्रभावित होती है, जिससे असमानताओं और भूमिकाओं में परिवर्तन देखा जा सकता है।

इस प्रकार समाजशास्त्रीय विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि एकल परिवार केवल एक पारिवारिक संरचना नहीं है, बल्कि यह आधुनिक समाज की जटिल सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं का परिणाम है। विभिन्न समाजशास्त्रीय सिद्धांत इस परिवर्तन को अलग-अलग दृष्टिकोण से समझाते हैं, जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि परिवार संस्था एक गतिशील और परिवर्तनशील सामाजिक इकाई है, जो समय और परिस्थितियों के अनुसार अपने स्वरूप को बदलती रहती है।

### 13. निष्कर्ष (Conclusion)

एकल (न्यूक्लियर) परिवारों का बढ़ता प्रचलन भारतीय समाज में हो रहे व्यापक और बहुआयामी सामाजिक परिवर्तन का प्रत्यक्ष परिणाम है। यह परिवर्तन केवल परिवार की संरचना में आए बदलाव तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आर्थिक विकास, औद्योगीकरण, नगरीकरण, शिक्षा के विस्तार, वैश्वीकरण तथा बदलती सांस्कृतिक मान्यताओं की एक जटिल प्रक्रिया का हिस्सा है। आधुनिक समाज में व्यक्ति की आवश्यकताएँ, आकांक्षाएँ और जीवन शैली में आए परिवर्तन ने पारंपरिक संयुक्त परिवार व्यवस्था को प्रभावित किया है और उसके स्थान पर एकल परिवारों को अधिक व्यावहारिक एवं अनुकूल विकल्प के रूप में स्थापित किया है।

एकल परिवारों ने आधुनिक समाज में व्यक्तियों को अनेक प्रकार के अवसर प्रदान किए हैं। इनमें सबसे प्रमुख है व्यक्तिगत स्वतंत्रता, जिसके अंतर्गत व्यक्ति अपने जीवन, करियर, शिक्षा और पारिवारिक निर्णयों को अधिक स्वतंत्र रूप से निर्धारित कर सकता है। इसके साथ ही आत्मनिर्भरता, निर्णय लेने की क्षमता और आधुनिक जीवन शैली को अपनाने की प्रवृत्ति में भी वृद्धि हुई है। छोटे परिवारों में जिम्मेदारियाँ सीमित होने के कारण जीवन अधिक व्यवस्थित और केंद्रित हो जाता है, जिससे व्यक्तियों को अपने लक्ष्यों पर अधिक ध्यान देने का अवसर मिलता है।

हालांकि, इस पारिवारिक संरचना के कुछ महत्वपूर्ण नकारात्मक पहलू भी सामने आए हैं। संयुक्त परिवारों में मिलने वाली सामाजिक सुरक्षा और सहयोग की व्यवस्था अपेक्षाकृत कमजोर हुई है। वृद्धजनों की देखभाल, बच्चों का समुचित सामाजिककरण तथा पारिवारिक सहयोग की भावना में कमी जैसी समस्याएँ आधुनिक समाज में प्रमुख रूप से देखी जा रही हैं। इसके अतिरिक्त, भावनात्मक समर्थन और सामूहिक जीवन के अनुभवों में भी कमी आई है, जिससे कई बार अकेलेपन और सामाजिक अलगाव की स्थिति उत्पन्न होती है।

अतः यह आवश्यक हो जाता है कि आधुनिक समाज में पारिवारिक संरचना के इस परिवर्तन को संतुलित दृष्टिकोण से देखा जाए। एक ओर जहाँ एकल परिवार आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप

हैं, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों, सामाजिक सहयोग और पीढ़ियों के बीच संबंधों का संरक्षण भी अत्यंत आवश्यक है। एक संतुलित पारिवारिक व्यवस्था ही समाज की स्थिरता, विकास और सामाजिक एकता को बनाए रखने में सक्षम हो सकती है।

#### 14. सुझाव (Suggestions)

आधुनिक भारतीय समाज में एकल परिवारों के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए यह आवश्यक है कि सामाजिक नीतियों, पारिवारिक व्यवहार और सामुदायिक संरचना में ऐसे सुधार किए जाएँ, जो पारिवारिक स्थिरता और सामाजिक सहयोग को बनाए रखने में सहायक हों।

सबसे पहले, परिवारों में पीढ़ियों के बीच संवाद को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। आधुनिक जीवन की व्यस्तता के बावजूद माता-पिता, बच्चों और वृद्ध सदस्यों के बीच नियमित संवाद और सहभागिता पारिवारिक संबंधों को मजबूत बनाती है। इससे अनुभव और ज्ञान का आदान-प्रदान भी संभव होता है।

दूसरे, वृद्धजनों के लिए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को और अधिक प्रभावी तथा व्यापक बनाया जाना चाहिए। स्वास्थ्य सेवाओं, आर्थिक सहायता और सामाजिक संरक्षण के माध्यम से वृद्धजनों को सम्मानजनक एवं सुरक्षित जीवन प्रदान किया जा सकता है। इसके साथ ही परिवारों को भी वृद्ध सदस्यों के प्रति संवेदनशील और सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

तीसरे, बच्चों के सामाजिक और नैतिक विकास के लिए पारिवारिक सहभागिता अत्यंत आवश्यक है। माता-पिता को बच्चों की शिक्षा के साथ-साथ उनके नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक समझ और सामाजिक व्यवहार के विकास पर भी ध्यान देना चाहिए, ताकि वे संतुलित व्यक्तित्व का निर्माण कर सकें।

चौथे, आधुनिक जीवन शैली और पारंपरिक मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित किया जाना चाहिए। एक ओर आधुनिकता, स्वतंत्रता और प्रगति को अपनाना आवश्यक है, वहीं दूसरी ओर पारिवारिक एकता, सहयोग, सम्मान और सांस्कृतिक परंपराओं का संरक्षण भी जरूरी है।

पाँचवें, कार्यरत माता-पिता के लिए बेहतर सामाजिक सहायता प्रणाली विकसित की जानी चाहिए, जिसमें चाइल्ड केयर सुविधाएँ, कार्य-जीवन संतुलन नीतियाँ और पारिवारिक सहायता सेवाएँ शामिल हों। इससे परिवार और कार्य दोनों क्षेत्रों में संतुलन स्थापित करने में सहायता मिलेगी।

अंततः कहा जा सकता है कि यदि इन सुझावों को प्रभावी रूप से लागू किया जाए, तो एकल परिवारों के लाभों का अधिकतम उपयोग करते हुए उनके नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सकता है और एक संतुलित, सशक्त तथा स्थिर सामाजिक व्यवस्था का निर्माण किया जा सकता है।

### संदर्भ सूची (References)

1. Karve, I. (1965). *Kinship Organization in India*. Asia Publishing House.
2. Parsons, T. (1955). *Family, Socialization and Interaction Process*. Free Press.
3. Srinivas, M. N. (1966). *Social Change in Modern India*. University of California Press.
4. Kapadia, K. M. (1966). *Marriage and Family in India*. Oxford University Press.
5. Giddens, A. (2009). *Sociology*. Polity Press.
6. Desai, I. P. (1975). *Modernization of Family and Social Change in India*.
7. Sharma, R. N. (2010). *Indian Society and Social Change*. Atlantic Publishers.
8. Government of India. *Census of India Reports*.
9. Shah, A. M. (1998). *The Family in India: Critical Essays*. Orient Longman.
10. Uberoi, P. (1993). *Family, Kinship and Marriage in India*. Oxford University Press.
11. Beteille, André. (1996). *Caste, Class and Power: Changing Patterns of Stratification in a Tanjore Village*. New Delhi: Oxford University Press.
12. Davis, Kingsley. (1955). *Human Society*. New York: Macmillan.
13. Merton, Robert K. (1968). *Social Theory and Social Structure*. New York: Free Press.
14. Berger, Peter L., & Luckmann, Thomas. (1966). *The Social Construction of Reality*. New York: Anchor Books.
15. Ogburn, William F. (1950). *Social Change*. New York: Viking Press.
16. Inkeles, Alex. (1969). *Making Men Modern: On the Causes and Consequences of Individual Change in Six Developing Countries*. *American Journal of Sociology*.
17. Goode, William J. (1963). *World Revolution and Family Patterns*. New York: Free Press.
18. Fox, Robin. (1967). *Kinship and Marriage: An Anthropological Perspective*. London: Cambridge University Press.
19. Radcliffe-Brown, A. R. (1952). *Structure and Function in Primitive Society*. London: Cohen & West.
20. Levy, Marion J. (1966). *Modernization and the Structure of Societies*. Princeton University Press.
21. Dumont, Louis. (1970). *Homo Hierarchicus: The Caste System and Its Implications*. Chicago: University of Chicago Press.
22. Mandelbaum, David G. (1970). *Society in India*. Berkeley: University of California Press.
23. Sharma, K. L. (1997). *Indian Social Structure and Change*. Jaipur: Rawat Publications.
24. Singh, Yogendra. (1973). *Modernization of Indian Tradition*. New Delhi: Thomson Press.
25. Bose, Nirmal Kumar. (1967). *Culture and Society in India*. Bombay: Asia Publishing House.
26. Kapadia, K. M. (1966). *Marriage and Family in India*. London: Oxford University Press.
27. Shah, A. M. (1998). *The Family in India: Critical Essays*. New Delhi: Orient Longman.

28. Uberoi, Patricia. (2006). *Freedom and Destiny: Gender, Family and Popular Culture in India*. New Delhi: Oxford University Press.
29. Ritzer, George. (2011). *Sociological Theory*. New York: McGraw-Hill.
30. Giddens, Anthony. (2009). *Sociology*. Cambridge: Polity Press.



# EARN YOUR MBA

WWW.IIMPS.IN



Accreditation & Ranking



UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

☎ 011-41005174

R  
S  
E  
A  
R  
C  
H  
G  
A  
T  
E  
W  
A  
Y

## STOP PLAGIARISM



**Arogyam Ayurveda**  
Holistic Healing through herbs



A  
R  
O  
G  
Y  
A  
M  
O  
N  
L  
I  
N  
E

## PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER



### COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD



- BLUE** Calms your Child's Mind & Body
- YELLOW** Promotes Concentration, Stimulates the Memory
- PINK** Evokes Empathy, makes your Child Calm
- RED** Excites and energizes your Child's body
- GREEN** Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com



Confuse about your children's future?

**भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध**

**ISSN 2321 – 9726**

**[WWW.BHARTIYASHODH.COM](http://WWW.BHARTIYASHODH.COM)**



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF  
MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY**

**ISSN – 2250 – 1959 (O) 2348 – 9367 (P)**

**[WWW.IRJMSST.COM](http://WWW.IRJMSST.COM)**



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF  
COMMERCE, ARTS AND SCIENCE**

**ISSN 2319 – 9202**

**[WWW.CASIRJ.COM](http://WWW.CASIRJ.COM)**



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF  
MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES**

**ISSN 2277 – 9809 (O) 2348 - 9359 (P)**

**[WWW.IRJMSH.COM](http://WWW.IRJMSH.COM)**



**INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE  
ENGINEERING AND TECHNOLOGY**

**ISSN 2454-3195 (online)**

**[WWW.RJSET.COM](http://WWW.RJSET.COM)**



**INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF  
MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION**

**ISSN 2582-5445**

**[WWW.IRJMSI.COM](http://WWW.IRJMSI.COM)**



**JOURNAL OF LEGAL STUDIES, POLITICS  
AND ECONOMICS RESEARCH**

**[WWW.JLPER.COM](http://WWW.JLPER.COM)**

**JLPE**